(3) क्रमशः

13.A. + B.S.C.-24/3/2 November 2016
Part I Hindi रचना [illegible]

रसखान 16/9/20 Wednesday 09

चार वेद और पुराण नहीं पा सके उस परमात्मा को रसखान ने राधा के कुंज में पाया –

हेरत-हेरत हारि परयो
रसखान बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुरयो वह कुंज कुटीर में
बैठो पलोटत राधिका पायन।

रसखान [illegible] हैं तथा उनकी भक्ति प्रेम लक्षणा के अन्तर्गत आती है। रसखान की भक्ति [illegible] में पूर्णभक्ति के [illegible] प्रगाढ़ आत्मीयता प्रकट कर रहे हैं। इस आत्मीयता की प्राप्ति ही रसखान की भक्ति का लक्ष्य है। कृष्ण के प्रति रसखान का प्रेम इतना गहरा है कि वे जन्म-जन्मान्तर तक कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करना चाहते हैं। पूर्ण आराध्य की भूमि में स्थान पाने के लिये चाहे उन्हें जन्म में उन्हें पशु, पक्षी, या जड़ पत्थर में भी जन्म लेना पड़े तो रसखान को स्वीकार्य होगा। पर पल भर के लिये भी वे अपने आराध्य से अलग नहीं होना चाहते –

मानुष हौं तो वही रसखान
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहाँ बसु मेरो
चरौं नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को
जो धरयो कर छत्र पुरन्दर धारन।

क्रमशः –

November 2016

10

315-051

Thursday

24/3/21 (4)

B.A. + B.Sc. I Part

हिन्दी रचना प्रश्नोत्तर, —

B.A. + B.Sc. Part I

सामान्य हिन्दी

रसखान के

काव्य की विशेषता

[illegible]

रसखान की भक्ति अनन्य भक्ति है। उनका सारा कृतित्व ही कृष्ण में निमग्न है। रसखान ने आत्मसमर्पण किया है। कृष्ण के लिए वे [illegible] की [illegible] रहे हैं। वह सारे भौतिक ऐश्वर्य को [illegible] पर तीनों लोकों का राज त्यागने के लिए तैयार हैं —

या लकुटी अरु कामरिया पर
राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौ निधि को सुख
नंद की गाइ चराइ बिसारौं।

रसखान में अनन्य समर्पण प्राप्त है। इनका [illegible] ही कृष्ण को [illegible] है। मन [illegible] कहीं [illegible] कृष्ण में मिल जाने को व्याकुल है। इनकी [illegible] पर रीझ कर ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है —

"इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिये"

रसखान ने प्रेम की [illegible] की है। प्रेम ही उनके जीवन की पूंजी है। प्रेम को कवि ने [illegible] के समान बतलाया। —

क्रमशः —